प्रज्ञा–प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

5

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

प्रज्ञा–प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

5

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपतराय मार्ग, कुरुक्षेत्र – 136-118

दूरभाष : 01744 – 259941 ई – मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं वितरक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136-118

दूरभाष : 01744-259941 ई-मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjmu2006@yahoo.com
bssjk08gmail.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन, पठानकोट बाईपास, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses_jld@yahoo.co.in, ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति

हिम रश्मि परिसर, विकास नगर, शिमला-171 009 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2624624, 2620814

E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in
himachalshikshasamitishimla@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: mahamantri_nyas@yahoo.co.in

समर्थ शिक्षा समिति-दिल्ली

माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली-110 055

दूरभाष : 011-23628146, फैक्स : 23628146

E-mail: samiti59@live.com

प्रथम संस्करण : 2017

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

मुद्रक: बुलबुल प्रिंटिंग प्रैस
136-140/55, औद्योगिक क्षेत्र,
चण्डीगढ़, दूरभाष: 09988338711
ई-मेल: bulbulpress@gmail.com

संयोजक: जगन्नाथ शर्मा
महामंत्री
ग्रामीण शिक्षा विकास
समिति, हरियाणा

लेखक : सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती, हरियाणा

प्रस्तावना

इस पुस्तक के अध्ययन से भैया/बहिन स्वतन्त्र चिन्तन द्वारा भाषा सीखने और समझने में नैसर्गिक क्षमताओं का रचनात्मक प्रयोग करने में सक्षम होंगे। पाठ्य वस्तु परीक्षा आधारित न होकर मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T) के मानकों के अनुरूप बनकर भाषा के चारों कौशलों (श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन) में अभिवृद्धि करने वाली सिद्ध हो ऐसा प्रयास है।

कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से भाषा सरल, सहज, स्पष्ट एवं सुबोध बने इसका ध्यान रखा गया है। अध्ययन-अध्यापन में अभिरुचि के जागरण हेतु चित्रों की साज-सज्जा तथा भैया/बहिनों की आयु एवं ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखते हुए - कविताएँ, कहानी, गीत, लेख एवं संस्मरण इत्यादि का चयन किया गया है।

समय के साथ रुचियों/अभिरुचियों का परिवर्तन, परिवर्धन अवश्यम्भावी है परन्तु जीवन मूल्यों का आधार ही शिक्षा को सोद्देश्य गतिमान करने में सक्षम हुआ है। शिक्षण सूत्रों-'सरल से कठिन की ओर' 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' 'निश्चित से अनिश्चित की ओर' तथा शिक्षण युक्तियाँ-व्याख्या, कहानी, प्रश्नोत्तर, सहगान आदि के आधार पर पाठ्य सामग्री का चयन किया गया है।

सभी पाठों में अभ्यास कार्य के अन्तर्गत शिक्षणेतर गतिविधियों को विशेष स्थान देकर-सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (C.C.E पैटर्न) के मानकों को भी दृष्टिगत किया गया है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करेगी। आप सभी के बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से स्वागत करूँगा।

जिन ज्ञात-अज्ञात लेखकों, कवियों की रचनाओं का समावेश पुस्तक में किया गया है उन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख, विद्या भारती, हरियाणा

विषय सूची (Contents)

क्र.सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
1	भाषा, व्याकरण, लिपि तथा बोली (Language, Grammar, Script and Dialect)	
2	वर्ण-विचार (Phonology)	
3	शब्द-विचार (Morphology)	
4	संज्ञा (Noun)	
5	लिंग (Gender)	
6	वचन (Number)	
7	कारक (Case)	
8	सर्वनाम (Pronoun)	
9	विशेषण (Adjective)	
10	क्रिया (Verb)	
11	काल (Tense)	
12	अविकारी शब्द (Indeclinable Word)	
13	विराम चिह्न (Punctuation)	
14	वाक्य-विचार (Syntax)	
15	संधि (Joining)	
16	समास (Compound)	
17	उपसर्ग और प्रत्यय (Prefix and Sufix)	
18	विलोम तथा पर्यायवाची (Antonyms and Synonyms)	
19	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One word Substitution)	
20	अनेकार्थी शब्द (Word with Various meaning)	
21	समरूप भिन्नार्थक शब्द (Homophones)	
22	मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	
23	सूचना लेखन (Notice Writing)	
24	चित्र लेखन (Picture Writing)	
25	अपठित गद्यांश (Unseen Passage)	
26	संवाद लेखन (Dialague Writing)	
27	निबंध लेखन (Essay Writing)	
28	कहानी तथा अनुच्छेद लेखन (Story and Paragraph writing)	

1. भाषा, व्याकरण, लिपि तथा बोली
(Language, Grammar, Scrip and Dialect)

भाषा

भाषा मन के विचारों की अभिव्यक्ति है । मानव सभ्यता और भाषा का क्रमशः धीरे-धीरे विकास हुआ । पहले मानव संकेतों से अपना कार्य आगे बढ़ाता रहा । धीरे-धीरे इन्हीं संकेतों में सुधार होता गया और भाषा के रूप में विकास हुआ ।

भैया/बहनों हम अनेक माध्यमों से अपने मन के भाव व विचार प्रकट करते हैं । जैसे:-

1. परिवहन विभाग - यातायात सुचारू करने वाला सिपाही यातायात को अपने हाथों के संकेतों से नियन्त्रित करता है ।
2. रेल विभाग - रेलवे में रेल का गार्ड लाल, हरी झंडियों या प्रकाश के संकेतों से रेल यातायात नियन्त्रित करता है ।
3. खेलों में - शारीरिक शिक्षक अपनी सीटी के संकेतों से प्रतियोगिताएँ या खेल कराता है ।

उपर्युक्त संकेतों से भाषा का मौखिक स्वरूप देखा । हम अपने भावों को बोलकर तथा लिखकर भी प्रकट करते हैं । जब बोलकर, लिखकर अपने मन के भाव प्रकट होते हैं, भाषा कहलाते हैं जैसे:-

आज भारत ने क्रिकेट में पाकिस्तान को हरा दिया ।

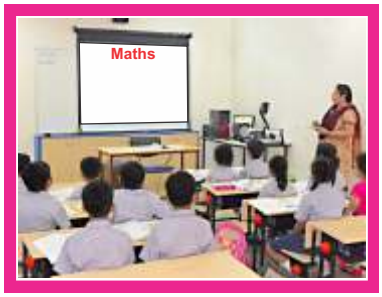

आज गणित विषय सभी के समझ में आ गया।

आदरणीय पिता जी,
सादर प्रणाम ।

उपर्युक्त चित्रों में समाचार-पत्र पढ़कर, गणित समझ में आ गया बात-चीत करके तथा पिता जी को पत्र लिखकर अपने भाव लिखकर प्रकट किए हैं ।

भाषा के रूप

हम सभी अपने मन के भावों को तीन प्रकार से व्यक्त करते हैं ।

1. **मौखिक रूप** – हम अपने मन के भाव बोलकर प्रकट करते हैं ।
2. **लिखित रूप** – हम अपने मन के भाव लिखकर प्रकट करते हैं ।
3. **सांकेतिक रूप** – हम अपने मन के भाव संकेतों में समझाते हैं ।

भाषा का मौखिक स्वरूप

भाषा का लिखित स्वरूप

भाषा का सांकेतिक स्वरूप

भाषा का सांकेतिक रूप –

संकेतों में कभी-कभी गलतियाँ भी हो जाती हैं । इसलिए इस रूप को समाज में सामान्यत: मान्यता नहीं मिल सकी है ।

बोलना, सुनना, लिखना और पढ़ना भाषा के चार कौशल होते हैं ।

विशेष जानकारी – हम अपने संसार में और भी अनेक प्रकार की ध्वनियाँ सुनते हैं । एक प्रकार से सभी ध्वनियाँ भाषा का स्वरूप होतीं हैं । कुछ हमारे समझ में आतीं हैं, कुछ नहीं । जैसे-

वायुयान की आवाज, इंजनों, कारखानों में हो रही आवाज आदि इसके अतिरिक्त जीव-जन्तुओं की आवाजें – मोर का पियाउ उ उ-पियाउ उ उ उ करना, गाय का रंभाना,

कबूतर का गुटर-गूँ और चिड़िया का चीं-चीं इत्यादि । हम इनकी बोलियाँ समझ नहीं सकते। इसलिए इस प्रकार की बोलियों को मानव की भाषा के अन्तर्गत नहीं माना गया हैं ।

भाषाएँ

1. **मातृ भाषा** – हम अपने माता-पिता तथा परिवार से जो भाषा सीखते हैं । उसे मातृ भाषा कहते हैं ।
2. **राज भाषा** – हमारा देश विभिन्न भाषाओं, वेश-भूषा तथा बोलियों के लिए जाना जाता है । अनेकता में एकता हिन्द की विशेषता । **जैसे**-

बंगाल में बंग्ला	पंजाब में पंजाबी
गुजरात में गुजराती	हिमाचल में हिन्दी
तमिलनाडु में तमिल	सिक्किम में नेपाली
महाराष्ट्र में मराठी	मणिपुर में मणिपुरी
असम में असमिया	ओड़िशा में उड़िया
गोवा में कोंकणी	कर्नाटक में कन्नड़
आन्ध्र में तेलगू	जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी (डोगरी, हिन्दी)

इस प्रकार हमारे संविधान में 22 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी सहायक राजभाषा है । कुल मिलाकर भारत में 58 भाषाएँ विद्यालयों में पढ़ाई जातीं हैं । हमारे देश की विशालता देखते ही बनती है, कहा जाता है कि **कोस-कोस पै बदले पानी चार कोस पै वाणी** अर्थात् एक या दो कि. मी. की दूरी पर पानी और 8 या 10 कि. मी. पर बोली बदल जाती है । जैसे - बोलियों का स्वरूप हरियाणा में हरियाणवी, राजस्थान में राजस्थानी, उत्तर प्रदेश में अनेक बोलियाँ बोली जातीं हैं । अवधी, ब्रज, बुन्देलखण्डी कन्नौजी, बिहार में भोजपुरी, मगही तथा मैथिली । राजस्थान में मेवाती, मालवी, जयपुरी और मारवाड़ी मुख्य बोलियाँ हैं । मध्यवर्ती पहाड़ी जिसमें कुमाऊँनी, गढ़वाली तथा पश्चिमी पहाड़ी जिसमें हिमाचल प्रदेश की अनेक बोलियाँ हैं।

एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को बोली कहते हैं ।

हमारे पड़ोसी देश

हमारे पड़ोसी देश तथा सभी देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ होती हैं - **जैसे** -

देश	भाषा
चीन	चीनी
पाकिस्तान	उर्दू
श्रीलंका	तमिल
अफगानिस्तान	अफगानी
बंग्लादेश	बंग्ला, उर्दू
नेपाल	नेपाली

लिपि

भाषा का आधार वर्ण अथवा चिह्न होते हैं । वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं तथा शब्द मिलकर वाक्य बनाते हैं। इन वर्णों को लिखने के लिए निश्चित चिह्न हैं । उन्हें हम भाषा की लिपि कहते हैं । भाषा का लेखनकार्य लिपि के द्वारा ही सम्भव है । हम लिखने की विधि को लिपि कहते हैं । सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है । हिन्दी और संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी है ।

भाषाएँ और उनकी लिपियाँ:-

अंग्रेजी	- रोमन	उर्दू	- फारसी	मराठी	- देवनागरी
इटेलियन	- रोमन	अरबी	- फारसी	नेपाली	- देवनागरी
जर्मन	- रोमन	कश्मीरी	- फारसी	कोंकणी	- देवनागरी
हिन्दी	- देवनागरी	संस्कृत	- देवनागरी	पंजाबी	- गुरुमुखी

व्याकरण

व्याकरण भाषा का प्राण है । व्याकरण के बिना भाषा अर्थ का अनर्थ कर देती है । उदाहरण देखें :-

शुद्ध वाक्य - दो दिन के लिए विद्यालय बंद रखा जाएगा ।

अशुद्ध वाक्य - दो दिन के लिए विद्यालय बंदर खा जाएगा ।

भाषा को शुद्ध, व्यवस्थित तथा ठीक-ठाक रखने के लिए नियम / व्यवस्थाएँ की जाती हैं । इसी व्यवस्था को व्याकरण कहते हैं । भाषा को शुद्ध बोलना, लिखना और पढ़ना सिखाने वाली कला ही व्याकरण कहलाती है । संसार में अनेक देश हैं । उनकी अपनी-अपनी भाषाएँ हैं ।

हमने पड़ोसी देशों की भाषाओं के नाम पढ़े । अपने देश की भाषा तथा बोलियाँ पढ़ीं और समझीं ।

अभ्यास

1. मौखिक अभ्यास :-

प्र. क. मानव सभ्यता और भाषा के विकास की गति बताइए ?

प्र. ख. भाषा के विना मानव किस माध्यम से कार्य करता था ?

प्र. ग. चीन देश में बोली जाने वाली भाषा बताओ ?

प्र. घ. भाषा का प्राण किसे कहा गया है ?

2. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

प्र. क. हम अपने मन के भावों को किन माध्यमों से प्रकट करते हैं ?

उ. .....

प्र. ख. मातृ भाषा किसे कहते हैं ?

उ. .....

प्र. ग. हमारे देश के विद्यालयों में कितनी भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं ?

उ. .....

प्र घ. बोली किसे कहते हैं ?

उ. .....

प्र ङ लिपि किसे कहते हैं ?

उ. .....

3. अधोलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

क. मन के ..... व्यक्त करने के साधन को ..... कहते हैं ।

ख. भाषा के दो रूप ..... , ... तीसरा ..... भी सीखा ।

ग. संसार में ..... देश है । उनकी अपनी ..... हैं ।

घ. हमने पड़ोसी ..... की भाषाएँ पढ़ीं ।

ङ ..... बिन ..... चिह्नों से लिखी जाती है उसे ....कहते हैं ।

च. भाषा का ..... रूप ..... कहा जाता है ।

छ. हमारे देश में ..... प्रचलित हैं ।

4. अधोलिखित सही वाक्यों पर सही (✓) तथा गलत पर गलत (✗) का चिह्न अंकित कीजिए ।

क. रेलवे का गार्ड सीटी के संकेतों से खेल कराता है । ☐

ख. शारीरिक शिक्षक सीटी के संकेतों से यातायात चलाता है । ☐

ग. बोलना, सुनना, लिखना तथा पढ़ना भाषा के चार कौशल हैं । ☐

घ. श्रीलंका में 'तमिल' भाषा बोली जाती है । ☐

ङ सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है । ☐

5. अधोलिखित विकल्पों में सही विकल्प को सही (✓) का चिह्न लगाइए ।

क. व्याकरण के बिना भाषा क्या कर देती है ?

अ. अर्थ ☐ आ. अनर्थ ☐ इ. व्यर्थ ☐

ख. हिन्दी और संस्कृत भाषा की लिपि क्या है ?

अ. देवनागरी ☐ आ. रोमन ☐ इ. फारसी ☐

ग. भाषा का लेखन कार्य किसके द्वारा सम्भव हैं ?

अ. व्याकरण ☐ आ. बोली ☐ इ. लिपि ☐

घ. एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को क्या कहते हैं ?

अ. भाषा ☐ आ. बोली ☐ इ. कविता ☐

ङ हिन्द की विशेषता क्या है ?

अ. अनेकता में एकता ☐ आ. भाषा और लिपि ☐ इ. वर्ण और अक्षर ☐

6. अधोलिखित प्रदेशों की भाषाएँ उनके सामने लिखिए ।

	प्रदेश	भाषा	प्रदेश	भाषा
क.	आन्ध्र	.....	बंगाल	.....
ख.	गोआ	.....	गुजरात	.....
ग.	असम	.....	पंजाब	.....
घ.	कर्नाटक	.....	असम	.....
ङ	ओड़िसा	.....	तमिलनाडु	.....
च.	सिक्किम	.....	महाराष्ट्र	.....
छ.	हिमाचल	.....	हरियाणा	.....

7. अधोलिखित भाषाओं को उनकी लिपियों से मिलान कीजिए ।

क.	हिन्दी	क.	रोमन
ख.	अंग्रेजी	ख.	देवनागरी
ग.	उर्दू	ग.	फारसी
घ.	कोंकणी	घ.	देवनागरी
ङ	जर्मन	ङ	फारसी
च.	अरबी	च.	रोमन